Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 5 ~ Issue 8 (2017) pp: 69-72
ISSN(Online) : 2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं पं. मदनमोहन मालवीय के राजनीतिक विचार

ज़िले सिंह चौधरी

राजनीति विज्ञान विभाग, सत्यवती कालेज सांध्य, दिल्ली विश्वविद्यालय

Received 14 Aug, 2017; Accepted 27 Aug, 2017 © The author(s) 2017. Published with open access at www.questjournals.org

प्रारम्भिक जीवन

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अपने विचारों तथा भावों को प्रकट करने का एक राजनीतिक अधिकार है। बीसवीं शताब्दी के पचास के दशक के बाद के वर्ष-मालवीय जी के जीवन के पेशे के निर्धारक वर्ष-आधुनिक भारत के सांस्कृतिक व राजनीतिक क्षेत्र में उथल-पुथल के वर्ष थे। उथल-पुथल भरे इस समय में ही मालवीय जी का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 को पं. ब्रजनाथ व मूनादेवी के यहाँ था। मालवीय जी का परिवार एक मध्य वर्गीय ब्राह्मण परिवार था। इनके पिता पंडित ब्रजनाथ जी संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। मालवीय जी की शुरुआती शिक्षा घर पर ही हुई और फिर उन्हें हरदेव की पाठशाला में पढ़ने भेज दिया गया। उसके बाद कुछ समय के लिए देवकीनंदन की विद्याधर्म प्रवर्धिनी पाठशाला में भी शिक्षा ग्रहण की। संस्कृत व हिन्दी में कुछ वर्षों की शिक्षा के बाद उन्हें इलाहाबाद जिला स्कूल में भेजा गया जहाँ से उन्होंने अपनी मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। पंडित देवकीनंदन ने उन्हें धार्मिक प्रवचन देने की कला में पारंगत किया। समाज सेवा भी स्कूली दिनों में ही मालवीय जी को सिऽाई गई।

मैट्रिक के बाद मालवीय जी ने मूइर सेंट्रल कॉलेज, इलाहाबाद में प्रवेश लिया। उन्होंने अपनी स्नातक डिग्री के लिए इतिहास, इंग्लिश व संस्कृत विषय लिए वर्ष 1884 में उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कॉलेज के दिनों में वह संस्कृत के प्रोफेसर आदित्यराम भट्टाचार्य के सम्पर्क में आए। प्रोफेसर भट्टkचार्य ने उनके जीवन पर बहुत प्रभाव डाला। इंग्लिश पर भी उनकी बहुत अच्छी पकड़ थी। वह उच्चकुलीन ब्राह्मण थे और रूढ़िवादी जीवन पद्धति का कड़ाई से पालन करते थे। वह संकीर्ण क्षेत्रवाद से मुक्त थे और हिन्दी की समस्या में गहरी रुचि लेते थे। मालवीय जी किसी जाति या धर्म के प्रति दुर्भावना नहीं रखते थे उनके मुस्लिम, ईसाई सभी मित्र थे। वह उदार मन-मस्तिष्क के व्यक्ति थे तथा अपने पूर्वजों के धर्म का कठोरता से पालन करते थे।

जिन पस्तकों ने उन पर गहरा प्रभाव डाला उनमें मालवीय जी "धर्म समुच्चय" का विशेष उल्लेख करते हैं जिसने उनकी दृष्टि का विस्तार किया व धर्म की उनकी समझ बढ़ाई। "भागवत्", "रामायण" व "महाभारत" उनके प्रिय ग्रंथ थे। प्रोफेसर आदित्य राम भट्टाचार्य ने धार्मिक मामलों में भी एक उच्चकुलीन ब्राह्मण व पक्के हिन्दू के तौर पर मालवीय जी पर भी गहरा प्रभाव डाला। मालवीय जी ने अपने जीवन में रूढ़िवादी जीवन पद्धति का बड़ी कड़ाई के साथ पालन करते थे। प्रोफेसर भट्टाचार्य ने मालवीय जी को संरक्षण दिया और उन्हें नेक व राजनीतिक जीवन के लिए प्रेरित किया। यह चाहे 1880 में मालवीय हिन्दू समाज में प्रवेश या 1886 में कांग्रेस में प्रवेश या समाज सेवा में उनकी रुचि या शिक्षा के प्रसार व स्वदेशी को समर्थन, उन पर उनके अध्यापक व मार्गदर्शक प्रोफेसर भट्टाचार्य का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है।

पत्रकारिता में मालवीय जी के अनुभव ने उन्हें निडर व साहसी का व सार्वजनिक जीवन में उन्हें निष्पक्ष व संतुलित दृष्टि अपनाने के लिए प्रशिक्षित कर दिया था। किसी भी अखबार के सम्पादक के रूप में वह जो भी नीति तय कर देते थे, उस नीति से अगर उनके स्टाफ का कोई सदस्य विचलित होता तो वह उसे डांटने में भी नहीं हिचकते थे। वकालत के उनके अनुभव ने ब्रिटिश लोगों की न्याय भावना में उनका विश्वास मजबूत किया व उन्हें अपनी बात मनवाने की कला सिखाई। शास्त्रों व धर्मग्रंथों के अध्ययन ने उनमें धार्मिक सहिष्णुता व विश्व बंधुत्व की भावना का विकास किया तथा अपने देश की स्वतंत्रता के लिए शांतिपूर्ण अहिंसक संघर्ष में उनका विश्वास बनाया। वह जानते थे कि भारत इतना मजबूत नहीं है कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके व ब्रिटिश सत्ता की ताकत का सामना कर सके। इस प्रकार इन सभी व इनके अलावा अन्य बहुत से कारकों ने उनकी मनःस्थिति का निर्माण किया। यही कारक उन्हें नरमपंथियों के करीब ले आए।

अंग्रेजी भाषा व साहित्य के अध्ययन ने भी मालवीय जी की दृष्टि को विस्तार दिया। इसने उन्हें सहानुभूति व सहयोग की भावना से राजनीतिक, सामाजिक मुद्दों को उठाने को प्रेरित किया। पश्चिमी शिक्षा व संस्कृति ने उन्हें ब्रिटिश प्रकृति व परम्परा को तथा लोकतांत्रिक संस्थानों की कार्यपद्धति को समझने में मदद की। अंग्रेजी भाषा व साहित्य की मदद से वह स्वतंत्रता, समानता व भाईचारे के नारों का सच्चा अर्थ समझ सके। कॉलेज में अपने इंग्लिश के अध्यापकों में से वह सबसे अधिक प्रिंसिपल हैरीसन से प्रभावित थे।

व्यक्तिगत आजादी

आजादी पर मालवीय जी के विचार संभवतः अठारहवीं एवं उन्नीसवीं शताब्दी के उदारवादी विचारधारा से प्रभावित थे। सामान्य तौर पर भारत के उदारवादी नेता प्राकृतिक अधिकारों में विश्वास रखते थे। मालवीय जी का मानना था, "व्यक्ति के अधिकार किसी विशेष चार्टर या संविधान पर निर्भर नहीं हैं जैसा कि हेमिल्टन ने कहा "वे तो सूर्य की किरण की तरह मनुष्य की संपूर्ण प्रकृति में, ईश्वर के हाथों लिखे हुए हैं जिन्हें नश्वर शक्ति द्वारा कभी भी मिटाया नहीं जा सकता।'' इनमें जीवन व आजादी की सुरक्षा का अधिकार शामिल है। इन विचारों का समर्थन मालवीय जी भारतीय दर्शन की दो शाखाओं "सांख्य दर्शन" व "वेदांत दर्शन" में पाते हैं। सांख्य दर्शन आजादी को "मस्तिष्क की दशा", "एक विशिष्ट ज्ञान", 'विवेक' मानती है जो उसे अपने वातावरण से अलग, विशिष्ट बनाता है। जब तक मनुष्य यह विवेक नहीं पैदा करता, तब तक वह कमजोर व जीवनहीन है।

संक्षेप में, आजादी व्यक्ति की वह क्षमता है जिससे वह अपनी स्थिति को बदल सकता है। यही एक राष्ट्र के लिए भी सही है। स्वतंत्रता पर अपने विचारों के समर्थन में मालवीय जी हीगल का उद्धरण देते हैं। वह आजादी के तथा साथ ही मनुष्य के अधिकारों के समर्थक थे। इसीलिए, वह स्वाभाविक रूप से सरकार की उन सभी नीतियों का विरोध करते थे जिनसे व्यक्तिगत आजादी का हनन होता हो। पत्रकार के रूप में उन पर हर समय यह खतरा रहता था कि अधिकारी उनसे नाराज हो जाएंगे। उन्होंने हमेशा प्रेस की आजादी के लिए संघर्ष किया। वकील के रूप में उन्होंने राजनैतिक मुकदमे लड़े और व्यक्तिगत आजादी का समर्थन किया। लेजिस्लेटिव काउंसिल के सदस्य के रूप में भी वह व्यक्तिगत आजादी के प्रति सजग रहे। देश के लिए संघर्ष करते हुए उन्होंने पीड़ा व कुर्बानी का रास्ता चुना। इस प्रकार उन्होंने अपना सारा जीवन व्यक्तिगत स्वतंत्रता व आजादी के लिए संघर्ष करने में बिताया।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता व प्रेस की आजादी

मालवीय जी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सबसे महत्त्वपूर्ण मानते थे। इस संबंध में वह इरसिसिन का उद्धरण देते हैं जो कहता है "अन्य स्वतंत्रता सरकार के अंतर्गत होती है---जबकि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सरकार को उसके कर्त्तव्यों के पालन के लिए बाध्य करती है।" मालवीय जी के अनुसार इस स्वतंत्रता ने हर युग में सच्चाई के बलिदानी पैदा किए हैं और दुनिया को अज्ञानता से मुक्ति उन लोगों के निर्दोष खून से मिली जिन्होंने इस दुनिया को ज्ञानवान बनाया। वह हर प्रकार की राय व्यक्त किए जाने पर दण्ड देने के पक्ष में नहीं

थे। वह मानते थे कि विचार की स्वतंत्रता में उस विचार को लिखकर या बोलकर प्रचार करने की स्वतंत्रता भी शामिल है। इसमें प्रेस की स्वतंत्रता भी अंतर्निहित है। वह मानते थे कि विचार व विचार-विमर्श की स्वतंत्रता जनता व प्रशासन दोनों के पक्ष में है तथा प्रेस की आवाज दबाने के लिए पर्याप्त कारण होने चाहिए। सरकार का अनुमोदन प्राप्त नहीं होने के बावजूद कुछ लेख लिखे जाने पर देश निकाले की सजा का विरोध करते थे। मालवीय जी ने जल्दी ही प्रेस का महत्त्व समझ लिया था। जिन्दगी भर उनकी रुचि इससे बनी रही। परमानंद लिखते हैं, "उन्होंने अपने दो अखबार स्थापित किए, आधा दर्जन अखबारों का संपादन किया या उनके संपादन में मदद की तथा कई अखबारों को शुरू करने में मदद की।"

सन् 1929 में उन्होंने स्वीकार किया कि जनमत तैयार करने या आंदोलन के लिए सहयोग समर्थन हासिल करने के लिए पत्रकारिता अभी भी सबसे अच्छा साधन है। उनके लेखन का सबसे बड़ा गुण था कि उन्होंने कभी भी किसी व्यक्ति या संस्था के विरुद्ध अभद्र या अश्लील भाषा का इस्तेमाल नहीं किया तथा हमेशा ऊँची पेशागत मर्यादा का पालन किया। उनकी आलोचना व टिप्पणियाँ हमेशा व्यवहारिक व सृजनात्मक होती थीं। वह प्रेस को सरकार का औजार बनने से बचाने का प्रयास करते थे। इस प्रकार के साहसी व निडर विचारों के कारण ही मालवीय का सरकार से अक्सर टकराव होता। कई मौकों पर 'अभ्युदय' को भारी जुर्माना भरना पड़ा तथा महीनों प्रकाशन स्थगित करना पड़ा। वह जानते थे कि प्रेस की आजादी के लिए यह कीमत चुकानी पड़ेगी। वह अपना अखबार चलाने के लिए जनता से धन एकत्र करने में नहीं हिचकते थे। सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार उनकी सामयिक मदद ने "लीडर" को असामयिक मौत से बचा लिया।'' लीडर के पास पैसा नहीं बचा तो मालवीय जी ने अपनी पत्नी से कहा, "यह मत सोचो कि तुम्हारे चार पुत्र हैं। लीडर तुम्हारा पांचवां पुत्र है। पैसे की कमी के कारण यह मृतप्रायः हो गया है। क्या मैं पिता के रूप में इसे मरता देख सकता हूँ।" इन बातों से उनकी पत्नी बड़ी विचलित हुईं और उन्होंने अपने सारे जेवर पैंतीस हजार रुपये में बेच दिए व सारे पैसे मालवीय जी को दे दिए। इसके बाद मालवीय जी ने अन्य लोगों से पैसा मांगा। उन्होंने कहा, "मैं अपने लिए पैसा मांगने की जगह मर जाना पसंद करूंगा लेकिन दूसरों के भले के लिए पैसा मांगने में कोई संकोच नहीं करूंगा।" अपनी सामर्थ्य के अनुसार लोगों ने इस पुण्य कार्य में उनका सहयोग किया। उनके कुछ मित्र उर्दू के साप्ताहिक पत्र "स्वराज" के साथ उनके संबंध व उसकी वित्तीय मदद करने को पसंद नहीं करते थे। 'स्वराज' का प्रकाशन 1909 में शुरू हुआ था। मित्रें की शिकायत पर मालवीय जी ने कहा कि उन्होंने जो किया है, वह प्रेस की आजादी के लिए किया है। यदि "मैंने ऐसा नहीं किया होता तो मुझ पर विचारों की आजादी समाप्त करने में मददगार होने का आरोप लगता। जहां तक इन युवाओं की मदद का सवाल है, मैं इन्हें मना कैसे करता। विचारों की भिन्नता होने के कारण क्या कोई पिता अपने पुत्रें को छोड़ सकता है, विशेषकर उन पुत्रें को जिनकी देशभक्ति सोने की तरह चमक रही है मुझे द्रोणाचार्य की तरह अभिमन्यु की हत्या के अपराध का अभियुक्त न बनने दो।" मालवीय जी का लोगों के प्रति प्रेम तथा उनके विचारों को समझकर उनके लिए काम करना और उनकी समस्याओं का समाधान करना आदि कार्यों को जैसे उन्होंने अपने जीवन का हिस्सा बना लिया था।

पंडित श्यामबिहारी मिश्र का कहना था कि "हिन्दी की जो उन्नति आज दिखाई देती है उसमें मालवीय जी का उद्योग मुख्य कहना चाहिए। इस अवसर पर हमें इनसे बढ़कर दूसरा कोई नहीं मिल सकता था। अपने अध्यक्षीय भाषण में मालवीय जी ने हिन्दी अपनाने, सरल हिन्दी का प्रयोग करने तथा अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्द ग्रहण करने की अपील की थी।"

संदर्भ:

राज से स्वराज्य – रामचन्द्र प्रधान, केंद्रीय माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली 2016

बैरन, हैरॉल्ड एम, 'द वेव ऑफ रेसिज़्म', इन लुइस एल. नॉलस एंड कैनैथ प्रैविट, इन्सटीटयुश्नल रेसिज़्म इन अमेरिका (प्रेन्टिस . हॉल, इंक.), 1969

क्रिस्टॉफर एडले जूनियर, 'फॉर्म ओवर सबस्टैन्स, नॉट ऑल ब्लैक एंड व्हाईट : अफरमेटिव ऐक्शन, रैस एण्ड अमेरिकन वैल्यूज़, प्स्वए हावर्ड लॉ रिव्यु, 1645, में 1997

फ्रैन ऐन्सले 'अफरमेटिव ऐक्शन' डाईवर्सिटी ऑफ इम्पैक्ट ऑफ एलिमिनेटिंग अफरमेटिव ऐक्शन' 27, गोल्डन गेट यूनिवर्सिटी लॉ रिव्यु 313, स्प्रिंग 1997